दिनांक 06.07.2018 को डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 117वीं जयंती के अवसर पर डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में माननीया राज्यपाल महोदया के अभिभाषण हेतु मुख्य बिन्दुः–

- आज का दिन सम्पूर्ण भारतवासियों के लिए अत्यन्त ही विशिष्ट है। इसी दिन भारत माँ की सेवा हेतु सदैव तत्पर रहनेवाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म हुआ था। आज उनकी जयंती के अवसर पर मैं उन्हें नमन करती हूँ तथा उनके प्रति अपनी श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ। साथ ही इस विश्वविद्यालय को डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 117वीं जयंती मनाने हेतु बधाई देती हूँ।
- 6 जुलाई, 1901 को कलकत्ता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का जन्म हुआ। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे।
- अपने पिता का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी अल्पायु में ही विद्या अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर ली थीं। 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। इस पद पर नियुक्ति पाने वाले वे सबसे कम आयु के कुलपति थे। एक विचारक तथा प्रखर शिक्षाविद् के रूप में उनकी उपलब्धि तथा ख्याति निरन्तर आगे बढ़ती गयी।
- डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी थे। वे इस धारणा के प्रबल समर्थक थे कि सांस्कृतिक दृष्टि से हम सब एक हैं।...

... इसलिए धर्म के आधार पर वे विभाजन के कट्टर विरोधी थे। वे मानते थे कि विभाजन सम्बन्धी उत्पन्न हुई परिस्थिति ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से थी।

- वे मानते थे कि आधारभूत सत्य यह है कि हम सब एक हैं। हममें कोई अन्तर नहीं है। हम सब एक ही रक्त के हैं। एक ही भाषा, एक ही संस्कृति और एक ही हमारी विरासत है।
- गांधी जी और सरदार पटेल के कहने पर वे भारत के पहले मन्त्रिमण्डल में भी शामिल हुए। उन्हें उद्योग जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गयी। संविधान सभा और प्रान्तीय संसद के सदस्य और केन्द्रीय मन्त्री के नाते उन्होंने शीघ्र ही अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। किन्तु उनके राष्ट्रवादी चिन्तन के चलते अन्य नेताओं से मतभेद बराबर बने रहे।...

...फलतः राष्ट्रीय हितों की प्रतिबद्धता को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानने के कारण उन्होंने मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया।

- सुखद है कि ऐसे महान व्यक्तित्व के नाम पर झारखण्ड में एक विश्वविद्यालय भी है। पूर्व में यह विश्वविद्यालय, राँची कॉलेज के नाम से जाना जाता था। यह कहते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि यह झारखण्ड के बहुत पुराने और गौरवशाली में शिक्षण संस्थानों में प्रमुख है।
- यहाँ के शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा से **Education, Administration, Politics & different Profession** में उपलब्धि हासिल की है। इसकी गौरवशाली परंपरा निरंतर अक्षुण्ण रहे, यह सभी का दायित्व है।
- आज का युग ज्ञान आधारित है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा अपने विद्यार्थियों को प्रदान करें। इस **University** से अपेक्षा है कि शिक्षा का यह ऐसा वातावरण स्थापित करने हेतु अग्रसर हों कि राज्य ही नहीं, बल्कि पूरे देश में अच्छे एवं मॉडल **Educational Institution** के रूप में गणना हो।
- हमारे **Educational Institutions** का यह प्रयास करना चाहिए कि विद्यार्थी एक सामाजिक, सु–संस्कृत और कुशल नागरिक के रूप में विकसित हों। वे नैतिकवान एवं चरित्रवान हों। ऐसे नागरिक निश्चित रूप से देश और समाज के लिए अमूल्य संपदा सिद्ध होंगे।
- आज जबकि राँची कॉलेज **upgrade** होकर **University** के रूप में अस्तित्व में आया है तो निश्चित तौर पर हम सबके लिए यह गौरव की बात है। यह कहने कि आवश्यकता नहीं है कि अब इस शिक्षण संस्थान से अपेक्षा भी बहुत बढ़ गई है। इस संस्थान को परिश्रम एवं निष्ठा के साथ और आगे ले जाने के लिए सबको **committed** होना होगा।
- लोगों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने हेतु रचनात्मक होकर कार्य करना होगा। इसकी छवि ऐसी स्थापित हो कि सुदूरवर्ती राज्यों के विद्यार्थी भी यहाँ नामांकन कराने एवं पढ़ने हेतु ललक रखें। इस संस्थान से शहर एवं राज्य का सम्मान भी जुड़े। यही श्रद्धेय डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!